पचपन खंभे लाल दीवारें उपन्यास के पात्र चरित्र-चित्रण

डॉ.गजानन वानखेडे

हिंदी विभाग प्रमुख

बलीराम पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, किनवट

सुषमा (बहन)

- ‘पचपन खंभे लाल दीवारें ’ उपन्यास में सुषमा ऐसी बहन के रूप में है जो निस्वार्थी एवं नौकरी कर अपने से. छोटे. भाई बहन एवं परिवार का भरण-पोषण करती है। सुषमा, परिवार के लिए स्वय के जीवन की होली करके दूसरो का जीवन प्रकाशमय करती है। सुषमा अपनी छोटी बहन की शादी के लिए कजर्क्ष लेती है। परिवार के लिए अपने प्रेमी नौल को ठुकरा देती है। कृष्णा मौसी सुषमा के बारे में कहती है, “सुषमा ने तो भाई-बहनो के कारण अपने को मिटा दिया। ”27 अपने व्यस्त कार्य से समय निकालकर छोटे. भाई के लिए स्वेटर बुनती है। छोटी बहन को डाक्टर बनाने की इच्छा रखती है। छोटी बहन को सलाह देती है, .“अम्मा की बात न सुना कर। अभी एक साल और है। फिर जहा कहेगी, वहा पढ़ने का इतजाम हो जाएगा। ”28 छोटी बहन को शिक्षा के लिए प्रेरित करती है। सुषमा बहन होकर मा-बाप का कर्तव्य निभाती है। सुषमा ने जो जिदगी मे दु:ख एव यातनाएँ सही है वह अपने छोटे. भाई-बहनो को नहीं देना चाहती है। सुषमा के बारे में डा. वदना मोहिते लिखती है, “सुषमा प्रगतिवादी विचारोवाली बहन के रूप है। परिवार मे बड़े. भाई के समान सारा कार्य करती है। अत: वह बहत ही उदार और दयालु बहन का रूप है। ”29 अत: कहा जा सकता है कि आधुनिक काल मे नारी अब घर परिवार की जिम्मेदारी बडी अच्छी तरह सँभाल सकती है। सुषमा प्रगतिशील बहन के रूप मे उपन्यास मे चित्रित है।

मीनाक्षी

- ‘पचपन खंभे लाल दीवारें ’ इस उपन्यास में मीनाक्षी सुषमा के साथ सह-अध्यापिका है। मीनाक्षी हर वक्त उपन्यास पढ़ती रहती थी। मीनाक्षी सुषमा की सबसे करीबी दोस्त है। सुषमा की हर बात की ख़बर मीनाक्षी को रहती है। हर वक्त मीनाक्षी सुषमा को उलझनों से छुटकारा दिलाती है। जब सह-अध्यापिका सुषमा पर अनैतिक आचरण का आरोप लगाती है तब सुषमा हताश हो जाती। तब मीनाक्षी कहती है, “दुनिया की यही रीति है सुषमा, दूसरों के फटे में पैर अड़ाना सबको अच्छा लगता है और हम बहुत प्रबुद्ध और प्रगतिशील महिलाएँ बनने का दम भरती है। ”30 सुषमा को नील के प्यार में अपनी जिम्मेदारी का अहसास कराती है तब मीनाक्षी कहती है, "तुम अपना उत्तरदायित्व समझने की चेष्टा करो तुम एक जिम्मेदारी के पद पर हो तुम्हें अपनी छात्राओं के सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत करना है। ”31 सुषमा को अपने पद की गरीमा समझाती है। साथ ही सुषमा पर आनेवाले संकट के प्रति सजक्ष्ग करती है।
- विदेश में शिक्षा प्राप्त सुसंस्कृत नवयुवक से विवाह करने की कामना करनेवाली मीनाक्षी एक व्यावहारिक व्यापारी से विवाह करने को राजी हो जाती है। वह अपने भविष्य को संवारना चाहती है। इस कारण वह जल्द ही विवाह का निर्णय लेती है।

सुषमा (प्रेमिका)

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास में सुषमा प्रेमिका के रूप में चित्रित है। हर नारी को एक जीवनसाथी की चाह होती है। चाहे वह कितने भी ऊँचे पद पर क्यों न हो। सुषमा नील नामक होनहार नवयुवक से प्रेम करती है किंतु सुषमा कॉलेज में वार्डन पद पर कार्यरत होने के कारण वह नील से मिलने से डरती है। दूसरी तरफ परिवार में अपाहिज़ पिता, स्वार्थी माँ, कुछ बनने के सपना लिये हुए छोटे भाई-बहन इनको भी सुषमा अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी। एक ओर पारिवारिक जिम्मेदारी है तो दूसरी ओर समाज का डर भी सुषमा को लगा रहता था। सुषमा का विचार था कि विवाह के बाद अपने परिवार की जिम्मेदारी कौन लेगा? इसी कारण चाहते हुए भी सुषमा शादी न कर सकी। सुषमा चारित्र्य संपन्न पेरमिका के रूप में है। सुषमा किसी स्वार्थ या धन की प्राप्ति के लिए नील से प्रेम नहीं करती थी। प्रेम में असफल होकर घुट.-घुट. कर मरनेवाली पेरमिका के रूप में सुषमा चित्रित है। सुषमा असफल प्रेमिका के रूप में चित्रित है।

मौसी

- ‘पचपन खंभे लाल दीवारें ’ इस उपन्यास में कृष्णा मौसी अम्मा की छोटी बहन है। कृष्णा मौसी को सुषमा से अपनत्व एवं आत्मीयता है। सुषमा के विवाह की चिंता मौसी को सताती रहती है। मौसी चाहती है सुषमा का विवाह जल्द से जल्द हो इस कारण मौसी अम्मा को कहती है, “तो क्या दीदी सुषमा को कुआरी रखोगी? इसका ब्याह नही करोगी जो अभी से नीरू के लिए दहेज जोड़ने लगी। ”54 कृष्णा मौसी अपनी जीजी को सचेत करते हुए कड़वी पर सच्ची बाते बताती है। जब अम्मा कहती है सुषमा स्वयं जिस युवक को पसंद करें हम उसका स्वीकार कर लेंगे। तब अम्मा को फट.कारते हुए मौसी कहती है, “अरे जाओ दीदी लड़की की उम्र थी तब तो आज़ादी दी नही। अब वह कहाँ दूढ.ने जाएगी। लड़कियाँ सभी की होती है, शादियां भी सभी करते है। ”55 वैसे ही सुषमा को भी समाज में विवाह की अनिवार्यता को समझाती है। सुषमा को अपने भविष्य को सँवारने के लिए सलाह देती है। अत: मौसी सुषमा के दु:ख को समझती है। उपन्यास में मौसी ममतामयी रूप में चित्रित है।

मामी

- 'पचपन खंभे लाल दीवारें ' उपन्यास में मामी वात्सल्यमयी रूप में चित्रित है। जब सुषमा के माता-पिता विवाह की चिंता छोड़ देते हैं। तब सुषमा की मामी को दु:ख होता है। मामी कहती है, "मैं तो कहूँगी कि एक लड़की का गला काट.कर दूसरी का ब्याह रचाकर बड़ी बीबी ने अच्छा नहीं किया। सुषमा के कंधें पर छ: हज़ार रुपयों का बोझ डालना कहाँ का न्याय है। "56 मामी सुषमा के माँ बाप को सुषमा का दु:ख समझने के लिए कहती है। इस प्रकार मामी सुषमा भविष्य के प्रति चिंता व्यक्त करती है।

सुषमा- (अध्यापिका)

- 'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास की सुषमा कॉलेज में अध्यापिका एवं वार्डन है। सुषमा यह पद बड.ी जिम्मेदारी से सँभालती है। उपन्यास की नायिका सुषमा का नौकरीपेशा जीवन घट.नभरा है। माँ-बाप की दृष्टि से सुषमा केवल पैसे कमाने का साधन मात्र है। पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण सुषमा विवाह से भी वंचित रहती है। सुषमा नील नामक होनहार नवयुवक से प्रेम करती है। सह-अध्यापिकाओं के षड़यंत्र के कारण सुषमा नील को ठुकरा देती है। मि. शास्त्री, मि. पुरी, मि. रायचौधरी आदि सह अध्यापिकाएँ बहुत ही द्वेषपूर्ण स्वभाव वाली हैं। सुषमा की प्रगति देखकर वह जलती है एवं वह सुषमा पर चारित्र्यहिनता का आरोप लगाती है। इस कारण सुषमा को अपनी नौकरी का क्षेत्र घट.नभरा लगता है। पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण सुषमा नौकरी नहीं छोड़ सकती। परिवार एवं पद की गरीमा के ख.ातिर सुषमा पे्रम एवं विवाह से वंचित रहती है।

मिस. पुरी

- 'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास में मिस. पुरी सुषमा की सह-अध्यापिका है। जो संस्कृत विषय पढ़ाती है। मिस. पुरी से कभी किसी की खुशी बरदाश्त नहीं होती थी। जब स्वातिगर्भवती होने के कारण खुदखुशी का प्रयत्न करती है। तब मिस. पुरी इस प्रसंग पर अपनी टिप्पणी देते हुए कहती है, मुझे उसके रंग-ढंग देखकर ही शक होता था। पार्ट-टाईम बंगला की लेक्चरर, उसमें हर रोज साठ-पैंसठ रुपए की साड़ी पहनना कैसे संभव हो सकता था। सुषमा के खिलाफ षड़यंत्र रचने के लिए मि. शास्त्री का साथ देती है। कॉलेज में एक दूसरे की निंदा करती रहती है। मिस. पुरी ईर्ष्यालु स्वभाव वाली है। वह संकुचित मनोवृत्तिवाली अध्यापिका है।

मिस. शास्त्री

- ‘पचपन खंभे लाल दीवारें ’ इस उपन्यास में मिस. शास्त्री संस्कृत विषय पढाती है। इसके साथ ही पूरे कॉलेज में किस छात्रा की किस युवक के साथ दोस्ती है। कौन कितने बजे रात को लौटता है, कौन अध्यापिकों के घर पैसे भेजता है। सबकी निंदा मिस. शास्त्री करती रहती है। मिस. शास्त्री को सुषमा का उंचे पद पर होना हमेशा ख़ट.कता है। इसी कारण वह सुषमा से जलती है एवं सुषमा के खिलाफ षड़यंत्र रचती है। प्रधानाचार्य को झूठी रिपोर्ट करती है। सुषमा पर अनैतिक आचरण का आरोप मिस. शास्त्री लगाती है। हमेशा दूसरों की जिंदगी में टाँग अड़.ाती रहती है। खुद जीवन भर प्रेम से वंचित होने के कारण सबको संदेह की नज़रो से देखती है। अत: कहा जा सकता है कि मि. शास्त्री अविवाहित होने के कारण कण्ठाग्रस्त हो गयी है। जिससे किसी की सफलता देखी नहीं जा सकती है। अत: कहा जा सकता है कि मि. शास्त्री कुण्ठाग्रस्त मनोवृत्तिवाली अध्यापिका है।

कार्य

- उषा प्रियंवदा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की है। तत्पश्चात् उन्होंने तीन साल तक अध्यापिका के रूप में दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज में सेवा की 1961 में उन्हें फुलब्राइट छात्रवृत्ति मिली। उषा प्रियंवदा भले ही विदेश में रहती है लेकिन अंदर से भारतीय संस्कृति, भारतीय नैतिक मूल्यों आदि पर आस्था है। अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन के लिए वे संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को गयी। जहाँ ब्लूमिल्टन, इंण्डियान में दो वर्ष पोस्ट डाक्टरल स्टडी की। बाद में विस्कासिन विश्वविद्यालय, मेडिसिन में अध्यापन कार्य करते समय उषा प्रियंवदा की शादी प्रसिद्ध भाषा विद्वान 'श्री किम विल्सन ' से हुई। आज-कल उषा प्रियंवदा अमेरिका के प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त होकर अपने पति की सेवा कर रही है।

भौंरी

- ‘पचपन खंभे लाल दीवारें ’ में सुषमा के घर में भौंरी नामक नौकरानी है। भौंरी सुषमा की संवेदनाओं एवं भावनाओं को समझती है। वह अनपढ़ है किंतु पढ़ी-लिखी भ्रष्ट अध्यापिकाओं से ज्यादा अकलमंद एवं समझदार है। भौंरी ही जानती है की सुषमा कितना दु:ख सहती है। लालच के कारण महिला हो या पुरुष अपने आप में बिखरते हुए दिखाई देते हैं। ईर्ष्या के कारण एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए किसी भी स्तर पर जाते हैं। वहीं निम्न वर्ग के लोगों में अपनत्व का भाव और समझदारी है। अपनत्व भरा व्यवहार भौंरी द्वारा दिखाई देता है। अपनी मालकिन के प्रति वफादार नौकरानी के रूप में भौंरी दिखाई देती है।

- धन्यवाद.....